JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

व्यंग्य : एक कलात्मक अभिव्यक्ति

डॉ. मनोज टेलर
एसोसिएट प्रोफेसर
शोध निर्देशक ,
विजुअल आर्ट विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली (राजस्थान)

महेश चंद्र शर्मा
शोध छात्र
विजुअल आर्ट विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली (राजस्थान)

व्यंग्य कला अभिव्यक्ति :– व्यंग्य कला अभिव्यक्ति की वैचारिक स्वतंत्रता का द्योतक है। 'काव्यशास्त्र' में शब्द की तीन शक्तियां विद्वत्जनों द्वारा स्वीकृत हैं। प्रथम ''अभिधा''... जिससे सीधे–सीधे वाच्यार्थ की प्रतीति होती है। दूसरी शब्द शक्ति लक्षणा है, जिससे लक्ष्यार्थ का बोध होता है। तीसरी शब्द शक्ति व्यंजना है जिसमें व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है। व्यंजना शक्ति शब्द और अर्थ की वह शक्ति है जो अभिधादि शक्तियों के चूक जाने पर एक ऐसे अर्थ का बोध करवाती है जो विलक्षण और झकझोर देने वाला होता है। वस्तुतः व्यंग्य का मूल उद्देश्य व्यक्ति, वर्ग, विचारधारा, समाज या सामाजिक विसंगतियों पर कुठाराघात करना है। इसमें व्यंग्यकार तभी तो अपने विरोध या आक्रोश के द्वारा भ्रष्ट व्यक्ति, अनाचार, अनैतिकता, असंगति, विद्रूपता आदि की विडंबना पर करारा प्रहार करके संतुष्ट हो जाता है तो कभी विद्रूपित समाज की तस्वीर सामान्य समाज के समक्ष प्रस्तुत करके साधारण नागरिक को उसका यथार्थ बोध करवाता है। जिसे हम साधारण बोल–चाल में ताना, चुटकी, कटाक्ष, ठिठोली या छींटाकशी कहते हैं। अंग्रेजी में यह स्टायर कहलाता है। व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार प्रत्यक्ष रूप से आक्रमण नहीं करता अपितु अप्रत्यक्ष रूप से विसंगतियों और विद्रूपताओं के विरुद्ध एक तेज हथियार के रूप में व्यंग्य का प्रयोग करता है। व्यंग्यात्मक शैली से ऐसे प्रखर बाण छोड़ता है जो भ्रष्टाचारी, अनाचारी अथवा विसंगति करने वाले के हृदय पर सीधा प्रहार करते हैं। जिसके आघात से लक्षित व्यक्ति की अंतरात्मा तिलमिला उठती है। हास्य, व्यंग्य कला एक ऐसी शैली का रूप है जिसमें कलाकार कला शैली को जन्म देता है जिनमें लगभग सभी मनुष्यों या दर्शकों के मन व मुख पर एक खुशी छलक उठती है और उस पल जब दर्शक उस कला का रसास्वादन करता है तो उसके मन की अनेक दुःख दुविधाएं धूमिल हो जाती है, जिसमें अभिव्यक्ति भी सशक्त हो जाती है तथा मनुष्य तनावमुक्त हो जाता ...

व्यंग्य चित्रकार एक कलाकार है जो व्यंग्य को अभिव्यक्ति की एक विधा के रूप में उपयोग करता है। कई व्यंग्य चित्रकार, लेखक भी हो सकते है। लेकिन वे कलाकार, नाटकों और भाषणों के

लेखक और चित्रकार और कार्टूनिस्ट जैसे दृश्य कलाकार भी हो सकते हैं। व्यंग्य अभिव्यक्ति का एक अनोखा रूप है क्योंकि यह सतह पर हास्य के रूप में है, जो व्यंगात्मक टिप्पणी साहित्य एवं व्यंग्य चित्रों में कलाकार करता है, और आमतौर पर उसके पीछे एक संदेश भेजने या बयान देने का इरादा होता है, बजाय विशुद्ध रूप से मनोरंजक होने के, कई व्यंग्य चित्रकार राजनीतिक व्यंग्य के क्षेत्र में काम करते हैं, राजनीतिक दृश्य पर टिप्पणी करने के लिए व्यंग्य का उपयोग व्यंग्य कलाकार करते हैं। व्यंग्यकार सार्वजनिक आंकड़ों, कानूनों और विभिन्न राजनीतिक रुझानों पर हमला कर सकते हैं जो उन्हें लगता है। उसी को ध्यान में रखकर अपनी रचनाओं एवं व्यंग्य चित्रों का निर्माण व्यंगात्मक अभिव्यक्ति के रूप में करते है। यहा ध्यान देने योग्य विषय यह है, कि एक व्यंग्यकार सामाजिक मुद्दों की भी जांच कर सकता है। हास्य आमतौर पर हर किसी के स्वाद के लिए नहीं होता है। कुछ मामलों में, व्यंग्यकार पहले खुले तौर पर विवादास्पद सामाजिक मुद्दों को संबोधित करते रहे हैं, हास्य, व्यंग्य में कहते हैं कि उन्हें सादे भाषा में नहीं कहा जा सकता है।

व्यंग्य की प्रथा प्राचीन है। साहित्य को ले या आजकल कटाक्ष के रूप में बनाये गए व्यंग्य चित्रों को देखे, हमे व्यंगात्मक तरिके से अपनी बात को बहुत ही प्रभावशाली स्वरूप में सन्देश को आम आदमी तक सीधे – सीधे न कहकर व्यंग्यात्मक माध्यम से पहुंचना हैं । जो मनुष्य को लंबे समय तक याद रहे, आम आदमी को हास्य, व्यंग्य पसंद है, और वे लंबे समय से अभिव्यक्ति के तरीकों के प्रशंसक हैं जो बहुस्तरीय और जटिल हो सकते हैं। ऐतिहासिक रूप से, व्यंग्य कभी–कभी एक खुला राजनीतिक बयान देने का एकमात्र तरीका होता था। लोग उदाहरण के लिए **"आई हेट द किंग,"** नहीं कह सकते थे, लेकिन वे राजा को एक राजनीतिक कार्टून में इस्तेमाल कर सकते है। जिसमें राजा के बारे में स्पष्ट संदेश छुपा होता है। व्यंग्य दुनिया के कुछ क्षेत्रों में राजनीतिक अभिव्यक्ति के लिए एक मूल्यवान उपकरण बना हुआ है, जब कला में वैचारिक स्वतंत्रता नहीं होती, बड़े यत्न पूर्वक, साहित्यिकता की रक्षा करते हुए, साहित्यकार व्यंग्य परोसता है। लेकिन जिस समाज में वैचारिक स्वतंत्रता है, वहां अक्सर व्यंग्य साहित्यकार व्यंग्य का दुरुपयोग करता भी मिल सकता है। वह पूरी तरह स्वच्छंद होकर शालीन व्यंग्य की बजाय गाली – गलौज पर उतर आता है। बस चले तो शायद मारने पीटने भी लग जाए । तर्क उसका लाजवाब है। जब समाज में गाली – गलौज मारपीट होती ही है, तो हम तो केवल उसका व्यंग्य चित्रण ही कर रहे हैं। साहित्य समाज का दर्पण जो ठहरा ! वह भूल जाता है कि समाज के इसी विद्रूप की आलोचना के लिए व्यंग्य किया जाता है, ना कि साहित्य व्यंग्य में उसे प्रश्रय देने के लिए । व्यंग्य समाज की विसंगतियों का बेशक आइना है, लेकिन इस आईने को ही व्यंग्य चित्रों में चित्रित कर अपने सामाजिक सन्देश को व्यंग्यकार अपने शब्दो एवं चित्रों में व्यक्त करता है ।

व्यंग्य चित्रों से रचना चिरस्थायी बनती है, यही कारण है की आज साहित्य में व्यंग्य विधा को स्वतंत्र विधा माना जाता है। विद्वानों के अनुसार प्राचीन काल से ही साहित्य में व्यंग्य की उपस्थिति मिलती है। सर्वाधिक प्रामाणिक व्यंग्य की उपस्थिति कबीर साहिब के दोहों में देखा जा सकता हैं ।

'पत्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार

ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार'

तथा

'कंकर–पत्थर जोरि के मस्जिद लई बनाय,

ता चढ़ि मुल्ला बांग दे का बहरा भया खुदाय'

आदि के रूप में व्यंगात्मक भावाभिव्यक्ति देखी जा सकती है। व्यंग्य की रोचक तथा शालीन भाषा का प्रयोग श्रेष्ठ साहित्य का निर्माण करता है। समाज की विसंगतियों, भ्रष्टाचार, सामाजिक शोषण अथवा राजनीति के गिरते स्तर की घटनाओं पर अप्रत्यक्ष रूप से तंज या व्यंग्य, जो हास्य नहीं कभी–कभी आक्रोश भी पैदा करता है। हास्य और व्यंग्य में अंतर है। व्यंग्य सहृदय के भीतर संवेदना, आक्रोश एवं संतुष्टि का संचार करता है। अंधविश्वासों, रूढियों, भ्रष्टाचार आदि पर व्यंग्य तो उचित है, किंतु किसी एक जाति, एक धर्म, राष्ट्रीय नायकों, त्योहारों आदि पर घृणापूर्ण व्यंग्य समाज में सौहार्द स्थापित नहीं कर सकता।

व्यंग्यकार इन्ही संचित भावनाओं को व्यंग्य के माध्यम से समाज में लाने का प्रयास करता है। व्यंग्य का उद्देश्य मनोरंजन करना नहीं अपितु जागृत करना है। व्यंग्यकार में सूक्ष्म पर्यवेक्षण करने की क्षमता होनी चाहिए। अच्छा व्यंग्य लेखन आपकी अवलोकन एवं पर्यवेक्षण क्षमता और संवेदनशीलता पर निर्भर करता है। हास्य और व्यंग्य दो अलग विधाएं हैं, व्यंग्य में हास्य हो ये जरूरी नहीं है, बल्कि व्यंग्य एक औजार है अपने विचारों को व्यक्त करने का, व्यंग्य की एक खासियत ये होती है, कि वो चुभता है, जोकि चुभना जरूरी भी है, व्यंग्य व्यक्तिगत कटाक्ष से उत्पन्न होता है। साहित्य विधा में इसे 'व्यंग्य' कहा जाता है। व्यक्तिगत क्रोध ही बाद में व्यंग्य रूप में जन्म लेता है, यह व्यंग्य जब जन्म लेता है तो उसका विक्षोभ उदात्तीकृत होकर वह निर्वैयक्तिक हो जाता है। व्यंग्य से व्यक्तिगत सुख–दुख उभर तो सकता है लेकिन उसमें विकृति होना जरूरी है।

हिंदी में संत–साहित्य से व्यंग्य का आरंभ माना जा सकता है। कबीर व्यंग्य के आदि प्रणेता हैं। उन्होंने मध्यकाल की सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्यपूर्ण शैली में प्रहार किया है। जाति–भेद, हिंदू–मुस्लमानों के धर्म–आडम्बर, गरीबी–अमीरी, रूढ़िवादिता आदि पर कबीर के व्यंग्य बड़े मारक हैं। यूरोप में डिवाइन कॉमेडी, दांते की लैटिन में लिखी किताब को मध्यकालीन व्यंग्य का महत्वपूर्ण उदहारण माना जाता है, जिसमें तत्कालीन व्यवस्था का मजाक उड़ाया गया था। व्यंग्य को मुहावरे मे व्यंग्यबाण कहा गया है। व्यंग्यकारों ने व्यंग्य साहित्य के सृजन में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। व्यंग्य समाज की विकृत स्थितियों को खोलने का आईना है । सामाजिक जीवन में फैली हर बुराई पर व्यंग्य लेखक का ध्यान रहता है और वह उसे अपने वास्तविक रूप में सामने रख देता है। तभी तो व्यंग्य को जीवन का साक्षात्कार कहा जा सकता है । व्यंगात्मक शैली लेखन की एक ऐसी शैली है या यूँ कहे बोलचाल की एक ऐसी शैली है। जिसके माध्यम से दिमाग से पैदल या घुटनो में दिमाग वाले महानुभावों को भी केवल शब्दों के माध्यम से अपनी बात को अवगत कराया जा सकता है , इसमे विपरीत क्रिया की कोई आशंका नही रहती।

साहित्य में व्यंग्य वैचारिक स्वतंत्रता का द्योतक है। जब वैचारिक स्वतंत्रता नहीं होती, बड़े यत्न पूर्वक, साहित्यिकता की रक्षा करते हुए, साहित्यकार व्यंग्य परोसता है। लेकिन जिस समाज में वैचारिक स्वतंत्रता है, वहां अक्सर व्यंग्य साहित्यकार व्यंग्य का दुरुपयोग करता भी मिल सकता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। व्यंग्य इस सीमा तक कटु हो सकता है कि वह किंचित भी हास्यजनक न हो। व्यंग्य बहुत तीखा वार करता है। उसमें कोई नैतिक बोध नही होता। उसमें दया, विनम्रता और

उदारता का भी लेशमात्र भी नही होती । व्यंग्य में कलाकार पूरी निर्दयता से सीधे–सीधे प्रहार करता है। वह युग की समूची परिस्थितियों की धज्जियाँ किसी को भी क्षमा किए बगैर उड़ाता है।

वह भूल जाता है कि समाज के इसी विद्रूप की आलोचना के लिए तो व्यंग्य किया जाता है, ना कि साहित्य में उसे प्रश्रय देने के लिए। व्यंग्य समाज की विसंगतियों का बेशक आइना है, लेकिन इस आईने को ही विसंगत करने के लिए साहित्यिक व्यंग्य नहीं होता। व्यंग्य के साथ अक्सर "हास्य" और "विनोद" जुड़ा रहता है। हम व्यंग्य–विनोद और हास्य–व्यंग्य जैसे पदों का इस्तेमाल भी करते हैं। ये शब्द समूह स्पष्टः घोषणा करते हैं, कि व्यंग्य केवल व्यंग्य नहीं होता, व्यंग्य की कटुता को दूर करने के लिए विनोद और हास्य की थोड़ी बहुत आवश्यकता रहती है। लेकिन इसका यह अर्थ भी नहीं है कि हास्य व्यंग्य को कुंठित कर दे। कितना व्यंग्य और कितना हास्य, लेखक को यह तय कर पाना अक्सर मुश्किल हो जाता है। लेकिन इसी अनुपात को ठीक–ठीक बरतने में ही व्यंग्य लेखक की प्रतिभा झलकती है। मुझे आज तक ऐसा कोई व्यंग्य लेखक नहीं मिला जिसमें हास्य का पूरी तरह अभाव हो। लेखन में पूरी तरह से हास्य बेशक संभव है।

व्यंग्य के तत्व वे बिंदु है जिस पर किसी विधा का मूल्यांकन किया जाता हैं। इसमें उन परिस्थितियों का वर्णन किया जाता है जो इस विधा के जन्म के कारक होते है। साहित्य समीक्षकों द्वारा अन्य विधाओं की तरह ही व्यंग्य के तत्वों की भी चर्चा की है। ये सभी तत्व व्यंग्य सृजन तथा व्यंग्य लिखने के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

इनके अभाव में व्यंग्य रचनाएँ सामान्य रचना बन कर रह जाती है –

विसंगतियों की उपस्थिति–विसंगति के बगैर व्यंग्य की कल्पना करना संभव नहीं है, प्रगतिशील व सकारात्मक सोच–साहित्यकार की सकारात्मक सोच उसे एक अच्छे व्यंग्य लेखन की ओर अग्रसित करता है ..., नैतिक मूल्यों की रक्षा ..., गहन चिंतन ..., पात्रों का चयन ..., व्यक्ति व समाज का पतन ..., भाषा–शैली ..., आलोचना, एवं बौद्धिकता.....

व्यंग्य समाज की विकृत स्थितियों का जितनी स्पष्टता से प्रगटीकरण करता है, उतनी साहित्य की अन्य विधाएँ नहीं कर पाती इसलिए आज की व्यवस्था में व्यंग्य का अत्यधिक महत्व है और उसी महत्व के कारण व्यंग्य आज लोकप्रिय हो रहा है। सामाजिक विकृतियों को उभारना यह व्यंग्य का प्रमुख कार्य है। व्यंग्यकार केवल सामाजिक ही नहीं आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि प्रकार की विकृतियों को भी दर्शाता है। व्यंग्य बुद्धिपरक होने के कारण हास्य से अधिक गहरा मर्मभेदी एवं कड़ा प्रहारक होता है। लेकिन बौद्धिकता के होने पर कभी– कभी पाठक उस स्तर तक न पहुँचने पर व्यंग्य कुंठित हो जाता है। व्यंग्य एक व्यंग्यास्त्र है जिसके द्वारा समाज को जागृत किया जाता है। इसकी चोट ऐसी प्रखर होती है, जो हँसाती तो है पर अपना चोट पहुँचाने का कार्य भी कर जाती है, जो चेतना को झंझोड़ देती है, सोचने पर मजबूर कर देती है। सामान्य मनुष्य से व्यंग्यकार अधिक संवेदनशील होते हैं। इसलिए उनका आक्रोश कहीं अधिक प्रखर एवं चेतना जगाने वाला होता है, इसी आक्रोश के कारण पीड़ा सामान्य हो जाती है। वही व्यंग्य शोषित, पीड़ित, वंचित वर्ग का प्रतिनिधि बन जाता है। व्यंग्य मनुष्य की अंतरात्मा को झंझोड़ता है उसकी आत्मग्लानि को जगाता है और मनुष्य उसी आत्मग्लानि से प्रेरित हो बुराई का त्याग करता है। मनुष्य में जागृति लाकर सुधारने का काम यह व्यंग्य ही करता है। व्यंग्यकार विवेक से नैतिक मूल्यों का समर्थन करता है, अर्थात व्यंग्य नकारात्मक लेखन नहीं, वह एक नैतिक प्रक्रिया है जिससे अच्छा ही उभरता है। व्यंग्य वह साधन है, जो घायल तो करता है, पर मिठी छुरी के बराबर होता है। जब सामाजिक विकृतियाँ इस हद तक बढ़ती है कि जहाँ न उपदेश काम आता है, न कोई दवा, तब व्यंग्य अपना काम करता है और उसमें साथ देता है। 'हास्य' जो व्यंग्य के प्रहार

को मर्मस्थल तक पहुँचने नहीं देता। आज समाज की परिस्थिति के चलते दिन–ब–दिन व्यंग्य का स्वर प्रखर होता जा रहा है।

एक चिंतक व्यंग्यकार का काम, तमाम उन विरोधों / विरोधाभासों में एक साम्य तलाशना होता है, जो समता / समरसता के संदर्भों की सृष्टि करता है। समता, समरूपता की परिस्थितियों के परिवेश की स्थापना, एक सृजनधर्मी साहित्यकार का सपना होता है। यह सपना, एक राष्ट्रव्यापी सोच की महत्ती भूमिका और उपलब्धि होता है। व्यंग्य, विरोध की खाइयों पर, एक पुल की तरह होता है जो नासमझी की दूरियों को कम करके, सद्भाव के धरातलों को विस्तार देता है।

निष्कर्ष :– इस विवेचना के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यंग्य और साहित्य व्यंग्य में अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण है। व्यंग्य की प्रेरणा और प्रभाव के कारण साहित्य और अधिक रूचिकर , सुस्पष्ट तथा व्यापक हो जाता है। साहित्य , शायरों तक ही समिति नहीं है, अपितू साहित्य , समाज की समस्त समस्याओं को ईमानदारी के साथ संजोता है। अपनी प्रगतिशील विचार धारा के प्रति सौंदर्यवादी दृष्टिकोण रखता है। हर अनुभव में कोई न कोई नसीहत छिपी होती है, साहित्य अपने अनुभवों का निचोड़ को भी कला आत्मसात करती है। इस प्रकार व्यंग्य के तत्वों का कला के साथ संगम व्यंग्य चित्रकार को कलात्मक अभिव्यक्ति के अपने लक्ष्य की पूर्णता का अहसास का अहसास करती है। जो साहित्य हमें नसीहत ही न दें वह साहित्य / व्यंग्य चित्रकार अपने उद्देश्य को पूर्ण नहीं करता ।

संदर्भ :–

1 . चतुर्वेदी डॉ. ममता – सौंदर्यशास्त्र

2. अग्रवाल डॉ.आर.ए.–भारतीय चित्रकला का विवेचन

3 .उपाध्याय भगवत शरण –भारतीय कला का इतिहास

4. डॉ. मधुकर –भारतीय चित्रकला ऐतिहासिक

5. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – कबीर वचनावली

6. बंसल डॉ. वीना – भारतीय कार्टून कला

–